मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 11

MTT-045

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
(पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)
सत्रांत परीक्षा
जून, 2024
एम.टी.टी.-045 : हिंदी-सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 20

(क) प्रशासनिक शब्दावली और अभिव्यक्तियों के अनुवाद की आवश्यकता तथा महत्व को बताते हुए, **दस** हिन्दी प्रशासनिक अभिव्यक्तियाँ और उनके सिन्धी अनुवाद लिखिए।

अथवा

(ख) वाणिज्यिक साहित्य सामग्री के प्रकारों की संक्षेप में चर्चा कीजिए। वाणिज्यिक साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ उदाहरण सहित समझाइए।

2. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखिए : 5

अर्थपूर्ण, सावधानी, पदक, असहमति, सुरक्षा

कार्यवाही, आदेश, नियंत्रण, अनुशासन, गणना

3. निम्नलिखित सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

तजुर्बो, हासिलु, भुलनामो, तालीमी, मसुवाड़,

सैलानी, मुर्क, आफताबु, इश्तिहारु, रिहाइशी

4. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इनमें से किन्हीं **पाँच** का हिंदी और सिंधी में अर्थ बताते हुए हिंदी और सिंधी के वाक्यों में अलग-अलग प्रयोग कीजिए : 20

हिंदी शब्द	**सिंधी शब्द**
मान्यता	अखबार नवीसी
याचिका	गैरवाजिबु
धरोहर	काराइतो
उत्कृष्ट	दस्तकारी
नेतृत्व	नामियारो

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** अनुच्छेदों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 10×4=40

(i) थार मरुस्थल के मध्य अवस्थित जैसलमेर क्षेत्र में अपने प्राचीन इतिहास को अपने अंदर समेटे हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से इनकी विशिष्ट महत्ता है तो दूसरी ओर अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर का भी यह क्षेत्र रखवाला है। प्राचीनकाल से कई संस्कृतियाँ यहाँ फली-फूली एवं आज भी संस्कृति के वास्तविक अवशेष जैसलमेर क्षेत्र में देखने को मिलेंगे। यहाँ का सरल व कर्मठ जीवन हर किसी को आकर्षित करने की क्षमता रखता है। वर्षों के संघर्षमयी जीवन को जूझते मानव में पैठे संस्कार आज भी अपनी गरिमा लिए हुए हैं। अभी तक पाश्चात्य संस्कृति का रंग यहाँ के जनजीवन पर नहीं चढ़ा है और न ही यहाँ का जीवन भौतिकवादी साधनों से पराधीन हुआ है।

विगत कई वर्षों से सैलानियों का अपार जन-समूह यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर को निखारने देश-विदेश से आता है और वह चकित-अचंभित हुए बिना नहीं रहता। विश्व मानचित्र पर पर्यटक स्थलों में जैसलमेर का अद्वितीय स्थान है। यहाँ पर्यटक वादियों-घाटियों की सुहानी सैर करने नहीं आता बल्कि मरु संस्कृति की विशिष्ट छवि तथा रेगिस्तानी समाज के प्रति जिज्ञासाओं को

शांत करने आता है। हजारों की संख्या में सैलानियों के दल यहाँ की कला व सांस्कृतिक महत्त्व के नमूने को निहारता-सा लगता है। सैलानी ही क्यों, यहाँ के निवासी भी अपनी गौरवमयी संस्कृति पर इतराते-से महसूस होते हैं, उनके हृदय में यहाँ की गरिमामयी संस्कृति हिलोरे लेती हैं। रग-रग में बसी है संस्कृति की सौंधी महक अपने मूल अस्तित्व के साथ। लेकिन पर्यटकों के निरंतर आगमन, दूरदर्शन व सिनेमा ने यहाँ की संस्कृति को प्रभावित किया है और शनैः-शनैः संस्कृति का वास्तविक स्वरूप नष्ट होता दिखाई दे रहा है।

(ii) यदि दिन ढल जाए, और पक्षियों का गीत समाप्त हो जाए—

थकी-हारी हवा यदि बहते-बहते अलसा जाए,

तो मुझे घने अंधकार की चादर से पूरी तरह ढक देना!

उसी तरह, जिस तरह तूने पृथ्वी को निद्रा की ओढ़नी से ढका है,

अथवा जिस तरह तूने दिवसावसान पर मुरझाते

कमलों की पंखुड़ियों को कोमलता से बन्द किया है!

जिसका पाथेय मंजिल पर पहुँचने से पहले ही
चुक जाता है,
जिसके मुख पर चिंताओं की रेखाएँ अंकित होती
हैं,
जिसकी वेशभूषा फटी हुई और धूल में
लथ-पथ है,
करुणा की घटाओं की गहरी गोपनता में
उसके दु:ख-दर्द को ढक देना।
उसकी लाज को हर लेना,
नई उषा के दर्शन को उन्मुख कर
अंधेरे-रूपी सुधा से उसका मन भर देना!

(iii) साहित्य अकादेमी के पश्चिमी क्षेत्र में चार भाषाएँ सम्मिलित हैं—गुजराती, मराठी, कोंकणी और सिंधी। साहित्य अकादेमी के कई ऐसे कार्यक्रम होते हैं जिनमें चारों भाषाओं की रचनाएं एक मंच पर प्रस्तुत की जाती हैं। लेकिन कार्यक्रमों की छोटी अवधि में संबद्ध भाषा के साहित्य की केवल हल्की-सी झलक मिल सकती है, भाषा के साहित्य का पूरा आस्वाद पाना तो असंभव ही माना जाएगा, और है। साहित्य अकादेमी के एक ही क्षेत्र की भाषाएँ होते हुए भी ऐसा अनुभव होता रहता है कि चारों भाषाओं के साहित्यकार

पाठक एक-दूसरे के साहित्य पुंज से अनभिज्ञ ह। इस अभाव के भाव को कुछ सीमा तक दूर करने हेतु ऐसा सोचा गया कि चारों भाषाओं की विभिन्न विधाओं के सम्मिलित संचय निकाले जाएँ ताकि संबद्ध भाषाओं की रचनाओं के स्वरूप का विस्तरण हो और न केवल पश्चिम क्षेत्र के पाठक लाभान्वित हों, अपितु अन्य भाषाओं के पाठक भी उन रचनाओं का परिचय पाएँ। इसी विचार का प्रत्यक्ष रूप यह कहानी संचय आपके हाथों में है।

यहाँ संकलित कहानियाँ, भारत की विभिन्न संस्कृतियों का चित्रण हैं। इनमें विषय विविधता है, ये मानव मन की परतों को हमारे सामने खोलती हैं, किरदारों के मनोव्यापारों का निरीक्षण करती हैं, और हमारे जीवनानुभवों को समृद्ध करती हैं, हमारे सामाजिक परिवेश को उद्घाटित करती हुई, हमारे अस्तित्व को संदर्भ देती हैं। हमारे हृदय को संवेदित कर हमें जीवंतता का अनुभव कराती है।

(iv) **बीमारियों की बड़ी वजह बन रहा है दूषित जल**

जल उपभोग मात्र की वस्तु न होकर आर्थिक और सामाजिक वस्तु है। सार्वजनिक स्तर पर

इसके प्रबंधन व निगरानी की जिम्मेदारी बनती है। जल उपयोग प्राथमिकता, मात्रा व गुणवत्ता में संतुलन भविष्य की महत्त्वपूर्ण जरूरत है।

जलवायु परिवर्तन और जन स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव मौजूदा समय की सबसे बड़ी चुनौतियाँ हैं। भारत में जल एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है, क्योंकि विश्व की 18 प्रतिशत आबादी भारत में रहती है, जबकि यहाँ ताजा जल संसाधन कुल वैश्विक जल संसाधनों का मात्र 4 प्रतिशत है। जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य संकट व जल समस्या आपस में जुड़े हुए मुद्दे हैं।

जलवायु परिवर्तन मानव गतिविधियों का परिणाम है, जैसे जीवाश्म ईंधन जलाना, जंगलों की कटाई और औद्योगीकरण। इनके चलते ग्लोबल वार्मिंग और मौसम की चरम परिस्थितियाँ देखने को मिलती हैं, जैसे लू चलना, बाढ़, अकाल और तूफान। नतीजतन तापमान, वर्षा और समुद्री तल में परिवर्तन के स्वास्थ्य व जल संसाधनों पर दूरगामी प्रभाव पड़ते हैं। जैसे सूखा पड़ने पर कृषि बर्बाद हो जाती है, जिसका असर लाखों लोगों की खाद्य सुरक्षा और आजीविका पर देखने को मिलता है। वहीं, बाढ़ से जल प्रदूषण के साथ लागों का विस्थापन होता है और जल-जनित

बीमारियाँ बढ़ती हैं। इन घटनाओं का स्वास्थ्य पर गंभीर व दीर्घकालिक असर पड़ता है, जिससे बच्चे, गर्भवती महिलाएँ और बुजुर्ग सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। भारत पहले ही स्वास्थ्य संकट का सामना कर रहा है। जहाँ तक भारत में जल संकट की बात है, यह बहुआयामी और जटिल है। जल उपलब्धता देश के लिए बड़ी चुनौती बनती जा रही है। यह कृषि व उद्योगों से लेकर घरेलू स्तर पर भी जीवन को प्रभावित कर रहा है।

(v) **वॉशिंगटन.** पर्सनल कंप्यूटर, आइफोन को दुनियाभर में फैलाने वाले एपल के संस्थापक स्टीव जॉब्स का नाम एक बार फिर सुर्खियों में है। दरअसल जॉब्स को प्रेरित करने वाले एक कंप्यूटर माउस की नीलामी करीब 1.48 करोड़ रुपए (1.47 लाख पाउंड) में हुई है। बोस्टन के आर.आर. नीलामीघर के जरिए यह माउस अपनी कीमत 12,000 पाउंड से करीब 12 गुना महँगा बिका। कंप्यूटर की दुनिया में इस शुरुआती माउस और कोडिंग कीसेट को कंट्रोलर सिस्टम के अगुवा डगलस एंगलबार्ट ने 1968 में बनाया था। उनके इस दुर्लभ माउस ने ही जॉब्स को पहले रोलरबॉल माउस की प्रेरणा दी थी।

एंगलबार्ट ने इसे बनाने में काफी मेहनत की थी। इस माउस में तीन बटन थे। हालाँकि बाद में आए माउस में काफी बदलाव हुआ और एक बॉल का इस्तेमाल किया जाने लगा। इन दिनों लाइट का इस्तेमाल होता है, जिसके जरिए ही माउस के कर्सर का मूवमेंट होता है।

अमरीका के कैलिफोर्निया में जन्मे जॉब्स का भारत से नाता रहा है। दरअसल एपल कंपनी करने से पहले वह अपनी पहली नौकरी से पैसे बचाकर भारत की यात्रा पर आए थे। इसके बाद अमरीका लौटकर 1974 में उन्होंने अपने स्कूल के दोस्त स्टीफन वोज्नियाक के साथ मिलकर कंप्यूटर बनाना शुरू किया। शुरुआत में उन्होंने अपने घर के गैरेज से ही काम किया। इसके बाद उन्होंने 1976 में एपल कंपनी की नींव रखी।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10

(i) दुनिया जे किनि चन्द आला शाइरनि में कालीदास जो शुमारु थींदो आहे। संदसि शाइरी पुराणे हिन्दुस्तान जी सभ्यता संस्कृती ऐं संस्कृत साहित्य जी चोटीअ जी अलामत तोर कबूलु कई वेंदी आहे.

आम राइ मूजिबि कालीदासु विक्रमादित्य जे नवनि रतननि मां हिकु हो ऐं उहो समो गुप्ता घराणे जो हो, जंहि खें 'सोने जमाने' तोर मञियो व्यो आहे, पर सन् 634 ई. जी हिक लिखावट में कालीदास जी साराह ऐं संदसि हिक किरिदार जो जिक्र आहे, तंहि मां तारीखदान इहो अनूमानु कढनि था त कालीदासु शुंग घराणें जी बिएं राजा शृंग मित्र जे दौर में रहियो जो सन् 170 ई. में थी गुजिरियो आहे, पर आमतोर कालीदास खे विक्रमादित्य जे नवनि रतननि में शुमारु कयो वेंदो आहे, पर वक्त जे लिहाज खां बियनि रतननि सां कालीदास जो वास्तो हुजे, इन जी जाण खातिरिख्वाहु नमूने न मिली सघी आहे।

अणपढ़ियल अवाम में पहिंजे मजिमूई दबियल ख्वाहिशुनि खे साकारु करण लाइ केतिरियूं ई डंद कथाऊं मुरवंजु थी वेदियूं आहिनि। अण पढ़ियल ऐ अबोझु अवाम कंहि मशहूरु दिलेर नाइक खे पाण सां वाबस्ता करणु चाहींदो आहे ऐं अहिड़ियूं ई के कथाऊं कालीदास जे शुरुआती जिंदगीअ सां पिणि लाग् मिलनि थ्यूं-त हू शुरूअ में अणपढ़ियलु हो ऐं पोइ कंहिं करामत जरीए बे मिसालु औजु माणियाई।

(ii) **सॉनेट — माउ ऐं पुटु**

मार खाई माउ जी, पुट कुंड में वेठे रुनो,
हर्फु माणसि खे पिटे कुझु, मां लगसि पुट खे खणण,
प्यार जी बचकार ते हिन मुहिंजे हथ में चकु विधो,
ऐं छडाए पाण, सागो जाइ ते वेठो रुअण।
हीअ हलति, ऐं शान में मुंहिंजे, डिठी हिन खां न वेई,
जोश, गुस्से में अची हूअ, उलरी आई पुट मथां,
मुहिंजे रोकण ते रुकी, झगड़ण वरी मूंसां लगी,
माउ पीउ जो झगड़ो ही चुप में बुधो पुट खौफ मां।
देरि सां उन राति जो हरिको सुतो बिए खां जुदा,
खड़िके ते, अधि राति जो, जागो मूं ही मंज़रु डिठो :
भरि में सुम्हंदे, माउ खं भाकी थे पाती पुट अजा,
जे फिरी, सुडको भरे, हिन पुट खे छातीअ ड
छिकियो !
मूंखे भासियो, माउ पुट खे पंहिंजो हिकु जम्हूर आहे!
खनि तहिं में, कंहिं टिएं जो दखलु नामंजूरु आहे!